

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

एम.ए. हिंदी

सेमेस्टर-1

(जून 2012-13 और 2013-14 के वर्षों के लिए)

भाग-१

प्रश्नपत्र - 1 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य

Core Course-01

प्रस्तावना: हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. कबीर-वाणी पीयूष संपा.डॉ. जयदेव सिंह (प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
2. जायसी- पद्मावत, संपा.डॉ.माता प्रसाद गुप्त (नागमती विरह तथा सिंहल द्वीप खण्ड)
(साहित्य भवन प्रा.लि. जीरो रोड, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. भक्तिकाल: हिंदी साहित्य का सुवर्ण युग।

2. निर्गुण भक्ति-धारा की विशेषताएँ।

ईकाई-2 1. हिंदी सूफी काव्य परंपरा।

2. हिंदी सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान।

ईकाई-3 कबीर-वाणी पीयूष

1. कबीर: जीवन परिचय।
2. कबीर काव्य का सामाजिक और क्रांतिकारी पक्ष: समग्र प्रयोजन।
3. कबीर का समन्वयवादी दृष्टिकाण।
4. कबीर का रहस्यवाद और प्रेमानुभूति।
5. कबीर-काव्य के विषय।
6. कबीर-काव्य के सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार।

7. कबीर-काव्य का कलात्मक पक्ष।

ईकाई-4 पद्मावत

1. 'पद्मावत' में इतिहास और कल्पना।
2. 'पद्मावत': प्रबंधात्मकता, प्रेमाभिव्यंजना, रहस्यवाद, अन्योक्ति अथवा समासोक्ति और दार्शनिकता।
3. 'पद्मावत' में विरह-वर्णन, प्रकृति-चित्रण और काव्य-सौष्ठव।

अंक विभाजन:

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का (हरेक पुस्तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधारित (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. कबीर-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन)
2. कबीर-संपा.विजयेन्द्र स्नातक
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी
4. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य-डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव
5. महाकवि जायसी और उनका काव्य-डॉ.इकबाल अहमद
6. जायसी-एक नई दृष्टि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. कबीर: एक नई दृष्टि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. कबीर के आलोचक-डॉ.धर्मवीर (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
9. हिंदी के प्राचीन कवि-डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
10. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
11. जायसी ग्रंथावली-संपा.आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
12. कबीरदास: विविध आयाम-संपा. प्रभाकर श्रोत्रिय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
13. पद्मावत का अनुशीलन-इन्द्रचन्द्र नारंग (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र -2 भारतीय काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन

Core Course-02

प्रस्तावना- किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 रस-सिद्धांत -रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

ईकाई-2 अलंकार -सिद्धांत-मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

रीति-सिद्धांत- रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवम् शैली, रीति-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

ईकाई-3 वक्रोक्ति -सिद्धांत -वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवम् अभिव्यंजनावाद।

ध्वनि -सिद्धांत -ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य।

औचित्य -काव्य -प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

ईकाई-4 हिंदी कवि -आचार्यों का काव्यशास्त्रीय चिंतन -लक्षण-काव्य-परंपरा एवम् कवि-शिक्षा।

व्यावहारिक समीक्षा -किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

अंक-विभाजन-

3 आलोचनात्मक प्रश्न – ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 प्रश्न व्यावहारिक समीक्षा तथा टिप्पणी पर आधारित- ईकाई 4 से (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. रस-सिद्धांत-डॉ. नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)
2. रस-सिद्धांत की दार्शनिक और नैतिक व्याख्या-डॉ. तारकनाथ बाली (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
3. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ. नगेन्द्र
4. अभिनव का रस विवेचन-नगीनदास पारेख
5. समीक्षा लोक-भगीरथ दीक्षित
6. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ. नगेन्द्र
7. साहित्य काव्य-विमर्श-डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य सिद्धांत-डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हिंदी आलोचना का विकास-नंदकिशोर नवल
10. काव्य के तत्त्व-देवेन्द्रनाथ शर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र -3 प्रयोजनमूलक हिंदी

Core Course-03

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 कामकाजी हिंदी

1. हिंदी के विभिन्न रूप- सर्जनात्मक भाषा,संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
2. कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य- प्रारूपण, पत्र-लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।
3. पारिभाषिक शब्दावली- स्वरूप एवम् महत्व, पारिभाषिक शब्दावली- निर्माण के सिद्धांत।
4. ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली।

ईकाई-2 हिंदी कंप्यूटिंग

5. कंप्यूटर- परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिशिंग का परिचय।
6. इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवम् इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।
7. इंटरनेट एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप।
8. लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना-प्राप्त करना, हिंदी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग अपलोडिंग,हिंदी सॉफ्टवेयर, पैकेज।

ईकाई-3- पत्रकारिता

9. पत्रकारिता- स्वरूप एवम् विभिन्न प्रकार।
10. हिंदी पत्रकारिता:उद्भव और विकास ।
11. प्रमुख प्रेस कानून एवम् आचार संहिता।

ईकाई-4 समाचार-लेखन

12. समाचार-लेखन-कला।
13. संपादन के आधारभूत तत्व।
14. व्यावहारिक प्रूफ शोधन।
15. शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवम् शीर्षक-संपादन।
16. संपादकीय-लेखन।
17. पृष्ठ-सज्जा।
18. साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवम् प्रेस-प्रबंधन।

अंक विभाजन-

1 प्रश्न टिप्पणी का – ईकाई 1-2-3 से एक और ईकाई 4 से एक (दो टिप्पणियाँ) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी:प्रासंगिकता एवम् परिदृश्य-डॉ.सु.नागलक्ष्मी (जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)
2. प्रयोजनमूलक हिंदी- कमल कुमार बोस (क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली)
3. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
4. प्रयोजनमूलक हिंदी:संरचना एवम् अनुप्रयोग-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ दिनेशगुप्त (राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता-डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. प्रयोजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
7. प्रयोजनमूलक हिंदी:सिद्धांत और प्रयोग-दंगल झाल्टे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. राजभाषा प्रशासनिक शब्दकोश-डॉ.एस.त्यागी (भारत भारती, दिल्ली)
9. कार्यालयीय हिंदी-डॉ.विजयपाल सिंह
10. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
11. प्रयोजनमूलक हिंदी के के विविध आयाम-माया सिंह, सिद्धेश्वर काश्यप (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
12. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग-विजयकुमार मल्होत्रा
13. कंप्यूटर और हिंदी-डॉ.हरिमोहन
14. राजभाषा हिंदी- कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाश, दिल्ली)
15. कंप्यूटर-डॉ.सी.एल.गर्ग
16. पत्रकारिता:विविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
17. संपादन-कला-डॉ.हरिमोहन
18. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
19. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क-डॉ.तारेश भाटिया
20. समाचार फीचर लेखन एवम् संपादन कला--डॉ.हरिमोहन
21. ब्रेक के बाद-सुधीश पचौरी
22. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
23. पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ-डॉ.भोलानाथ तिवारी

प्रश्नपत्र -4 आधुनिक हिंदी काव्य

Elective Course-01

प्रस्तावना- आधुनिक हिंदी काव्य नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में इसमें नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इसकी विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक तथा प्रासंगिक है।

1. कामायनी-जयशंकर प्रसाद (संदर्भ के लिए लज्जा सर्ग)
(प्रकाशक-)
2. द्वापर-मैथिलीशरण गुप्त (साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

2. द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि।

ईकाई-2 1. छायावादी काव्य: शब्द, परिभाषाएँ एवम् विशेषताएँ।

2. छायावाद का ऐतिहासिक महत्व।

ईकाई-3 द्वापर

1. राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त।

2. 'द्वापर': का काव्य-स्वरूप।

3. द्वापर में व्यक्त युगीन आदर्श अंतर्वस्तु एवम् वैष्णव भक्ति-भावना।

3. द्वापर के पात्र।

4. द्वापर का काव्य-वैभव।

ईकाई-4 कामायनी

1. प्रसाद की काव्य-यात्रा के विभिन्न चरण।

2. 'कामायनी' में इतिहास और कल्पना

3. 'कामायनी' का महाकाव्यत्व।

4. 'कामायनी': एक रूपक काव्य।

5. 'कामायनी' की पात्र-सृष्टि।

6. 'कामायनी' में अभिव्यक्त दार्शनिकता

7. 'कामायनी': भाव पक्ष और कला पक्ष।

अंक विभाजन:

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का ईकाई 3 और 4 पर आधारित (हरेक पुस्तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. जयशंकर प्रसाद-आचार्य नंददुलारे वाजपेयी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. मैथिलीशरण गुप्त- संपादक-नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)

3. मैथिलीशरण गुप्त: एक मूल्यांकन-राजीव सक्सेना, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली
4. मैथिलीशरण गुप्त: नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
5. मैथिलीशरण गुप्त: प्रासंगिकता के अंतर्सूत्र-कृष्णदत्त पालीवाल (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन-डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
7. कामायनी: एक पुनर्विचार-गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ-डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
9. कामायनी-लोचन (प्रथम और द्वितीय खण्ड) डॉ. उदयभानु सिंह (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
10. कामायनी की आलोचना-प्रक्रिया-डॉ. गिरिजा राय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

अथवा

प्रश्नपत्र – 4 छायावाद

Elective Course-01

प्रस्तावना- छायावाद हिंदी के आधुनिक काल की कविता की एक नूतन और मौलिक उपलब्धि है। इसमें कवियों ने अपनी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति की है। प्रेम, प्रकृति और अध्यात्म इसके मुख्य विषय रहे हैं। शैली इसकी नवीन है। प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील-स्तंभ हैं। छायावाद के बिना हम इस शताब्दी की धड़कनों को समझने में असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन-मनन बहुत ही प्रासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. प्रसाद - आँसू (प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
2. पंत - ग्राम्या (प्रकाशक- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
निम्नलिखित कविताएँ-

ग्रामयुवती, ग्रामनारी, वे आँखें, ग्राम वधू, ग्राम श्री, भारतमाता, संध्या के बाद, मजदूरनी के प्रति, नारी, उद्बोधन, वाणी।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

- ईकाई-1**
1. छायावाद: शब्द, परिभाषाएँ एवम् प्रमुख विशेषताएँ।
 2. छायावाद के प्रवर्तक।

- ईकाई-2**
1. छायावाद के प्रमुख कवि।
 2. कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना पर छायावाद का प्रभाव।

ईकाई-3 आँसू

1. कवि जयशंकर प्रसाद की काव्य-यात्रा।
2. 'आँसू': एक वेदना-काव्य।
3. छायावाद की एक प्रमुख रचना: 'आँसू'।

4. 'आँसू' का आलम्बन तथा काव्य-रूप।
5. 'आँसू' में प्रकृति-चित्रण।
6. 'आँसू': भाव-पक्ष और कला-पक्षा

ईकाइ-4 पल्लव

1. पंत की काव्य-यात्रा।
2. प्रगतिवाद और पंत।
3. 'ग्राम्या' में अभिव्यक्त प्रगतिवादी विचारधारा।
4. 'ग्राम्या' की कविताओं का भाव और कला-पक्ष।
5. 'ग्रामयुवती', 'वे आँखें', 'ग्राम श्री', एवम् 'संध्या के बाद' कविताओं का काव्य-सौंदर्य।

अंक विभाजन:

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का, ईकाई 3 और 4 पर आधारित (हरेक पुस्तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. छायावाद के आधार स्तंभ-गंगाप्रसाद पाण्डेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. सुमित्रानंदन पंत-आनंद प्रकाश दीक्षित
4. पंत की काव्य-भाषा-डॉ.कांता पंत (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. जयशंकर प्रसाद-आ.नंददुलारे वाजपेयी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र - 5 विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन

आदिकाल

Multi Disciplinary Course-03

हिंदी साहित्य की उचित जानकारी के लिए आदिकाल का अध्ययन अनिवार्य है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 अपभ्रंश: अर्थ और स्वरूप, साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश का विकास

अपभ्रंश काव्य-प्रबंधात्मक, मुक्तक, नीति, वीर और श्रृंगार काव्य-धाराएँ

अपभ्रंश और हिंदी काव्य का संबंध

ईकाई-2 आदिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्ति-ऐतिहासिक, श्रृंगारिक एवम् लौकिक काव्य।

आदिकाव्य की शिल्पगत विशेषताएँ-कथानक-शैलियाँ एवम् रूढियाँ, गेयता, काव्यरूप एवम् भाषा।

ईकाई-3 1. पृथ्वीराज रासो: कयमास-वध समय सं. माताप्रसाद गुप्त (लोकभारती प्रकाशन)

1. कवि चंद बरदाई-परिचय।
2. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता।
3. 'पृथ्वीराज रासो' : आदिकालीन प्रमुख रचना।
4. 'पृथ्वीराज रासो' : वर्ण्य-विषय।
5. 'कयमास-वध' में इतिहास और कल्पना।
6. 'कयमास-वध' : काव्य-सौंदर्य।

ईकाई-4 2. ढोला मारू रा दूहा -नरपति नाल्ह

1. 'ढोला मारू रा दूहा' : एक श्रेष्ठ मुक्त काव्य
2. 'ढोला मारू रा दूहा' में श्रृंगार-चित्रण
3. 'ढोला मारू रा दूहा' : सौंदर्य-चित्रण
4. ढोला और मालवणी।
5. 'ढोला मारू रा दूहा' में मारवणी का विरह-वर्णन
6. 'ढोला मारू रा दूहा' : काव्य-सौष्ठव।

अंक विभाजन-

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का, ईकाई 3 और 4 पर आधारित (हरेक पुस्तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग-डॉ. नामवर सिंह (लोकभारती)
4. पृथ्वीराज रासो: भाषा और साहित्य-डॉ. नामवरसिंह (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
5. पुरानी हिंदी-चंद्रधर शर्मा गुलेरी (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
6. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो-संपा. ह. प्र. द्विवेदी-डॉ. नामवर सिंह (साहित्य भवन, इलाहाबाद)

M.A. DEGREE COURSE HINDI

1ST SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 1 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -2 भारतीय काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER- 3 प्रयोजनमूलक हिंदी	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04

	Core Course-3					
4	PAPER -4 आधुनिक हिंदी काव्य Elective Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER -4 छायावाद Elective Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER- 5 आदिकाल Multi Disciplinary Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each Semester. Four Hours for each course per week Total teaching hours per week=20				Each Day 5 th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

एम.ए. हिंदी

सेमेस्टर-2

(जून 2012-13 और 2013-14 के वर्षों के लिए)

भाग-१

प्रश्नपत्र - 6 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य

Core Course-04

प्रस्तावना: भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। तो रीतिकालीन काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति में बेजोड़ रहा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. विनयपत्रिका-संपा. हरिचरण शर्मा (संदर्भ के लिए)
(प्रकाशक- जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

2. घनानंदः काव्य और आलोचना संपा.डॉ.किशोरी लाल (संदर्भ के लिए १ से २५ कवित्त)
(साहित्य भवन प्रा.लि. जीरो रोड, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 भक्तिकाल: सगुण भक्ति-धारा और तुलसीदास।

रामभक्ति-धारा: उद्भव और विकास

ईकाई-2 रीतिकालीन काव्य-धाराएँ।

रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा में घनानंद का स्थान।

ईकाई-3 तुलसीदास

1. तुलसी का जीवन-वृत्त।
2. 'विनयपत्रिका': काव्य-स्वरूप।
3. 'विनयपत्रिका': वस्तु-विधान।
4. 'विनयपत्रिका' में अभिव्यक्त कवि की दास्य-भक्ति।
5. 'विनयपत्रिका': भाव और कला-पक्ष।

ईकाई-4 घनानंद-कवित्त

1. घनानंद: जीवन-परिचय और रचनाएँ।
2. 'प्रेम की पीर' के कवि घनानंद।
3. घनानंद की भक्ति-भावना।
4. घनानंद के काव्य की विशेषताएँ।

अंक विभाजन:

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का ईकाई 3 और 4 पर आधारित (हरेक पुस्तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. तुलसी-संपा. उदयभानु सिंह
2. तुलसी की साधना-आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र
3. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. तुलसीदास-नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली)
5. तुलसीदास-संपा.डॉ.विश्वनाथ तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
6. विनयपत्रिका और निराला के विनयगीत-डॉ.मधुप कुमार (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. घनानंद और स्वच्छंद काव्य-धारा-डॉ.मनोहर गौड
8. घनानंद का काव्य-डॉ.रामदेव शुक्ल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. घनानंद का काव्य-शिल्प- डॉ.लखनपाल सिंह

प्रस्तावना- किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. प्लेटो - काव्य-सिद्धांत।

2. अरस्तू - अनुकरण-सिद्धांत।

3. लोंजाइनस - उदात्त की अवधारणा।

ईकाई-2 1. ड्राइडन के काव्य - सिद्धांत।

2. वड्सवर्थ -काव्य-भाषा का सिद्धांत।

3. कॉलरिज -कल्पना-सिद्धांत और ललित-कल्पना।

ईकाई-3 1. मैथ्यू आर्नल्ड -आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।

2. टी.एस.इलियट-परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ

समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

3. आई.ए.रिचर्ड्स - रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

ईकाई-4 1. सिद्धांत और वाद -आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविक्षेपणवाद तथा

अस्तित्ववाद-सामान्य परिचय व विशेषताएँ।

2. आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ-संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद-

सामान्य परिचय व विशेषताएँ।

अंक-विभाजन-

3 आलोचनात्मक प्रश्न – ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी पर आधारित- ईकाई 4 से (दो टिप्पणी) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र-डॉ. नगेन्द्र
 2. काव्य में उदात्त-तत्व-डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी
 3. उदात्त के बारे में-डॉ. निर्मला जैन
 4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ. नगेन्द्र
 5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ. भगीरथ मिश्र
 6. मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना-डॉ. शशिभूषण पांडेय (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
 7. पाश्चात्य साहित्य-चितन-संपा. निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
 8. कार्ल मार्क्स-कला और साहित्य-चितन-संपा. डॉ. नामवर सिंह
 9. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद-सुधीश पचौरी (हिमाचल प्रकाशन भंडार, दिल्ली)
 10. उत्तर आधुनिकता-कुछ विचार-संपा. देव शंकर नवीन तथा मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
 11. देरिदा का विखंडन और साहित्य-सुधीश पचौरी (आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा)
 12. उत्तर आधुनिक: साहित्यिक विमर्श-सुधीश पचौरी
 13. शास्त्रवादी और स्वच्छंदतावादी साहित्यादर्श और समीक्षा-प्रणाली-पी. वासवदत्ता (स्वराज प्रकाशन)
 - 14.
-

प्रश्नपत्र -8 प्रयोजनमूलक हिंदी

Core Course-06

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 मीडिया लेखन

1. जनसंचार- प्रौद्योगिकी एवम् चुनौतियाँ।
2. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप-मुद्रण, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट।

ईकाई-2 मीडिया लेखन

1. श्रव्य माध्यम (रेडियो) मौखिक भाषा का प्रकृति, समाचार-लेखन एवम् वाचन, रेडियो नाटक।
उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन-लेखन, फीचर तथा रिपोर्टाज।
2. दृश्य-श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन एवम् वीडियो), दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृश्य

एवम् श्रव्य सामग्री का सामंजस्य, पाश्च वाचन (वायस ओवर), पटकथा-लेखन, टेली-ड्रामा-डॉक्यू
ड्रामा, संवाद-लेखन, साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा।

3. इंटरनेट- सामग्री सृजन।

ईकाई-3 अनुवाद - सिद्धांत एवम् व्यवहार

1. अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवम् प्रविधि।
2. हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
3. कार्यालयी हिंदी और अनुवाद।

ईकाई-4 व्यावहारिक -अनुवाद-अभ्यास

1. व्यावहारिक -अनुवाद-गुजराती या अंग्रेजी से हिंदी में।
2. कार्यालयी अनुवाद- कार्यालयी एवम् प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग।
3. पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।
4. सारानुवाद।

अंक विभाजन-

3 आलोचनात्मक प्रश्न – ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 प्रश्न व्यावहारिक अनुवाद तथा प्रशासनिक शब्दावली – पदनाम पर आधारित, ईकाई-4 से (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी:प्रासंगिकता एवम् परिदृश्य-डॉ.सु.नागलक्ष्मी (जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)
2. प्रयोजनमूलक हिंदी-कमल कुमार बोस (क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली)
3. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
4. प्रयोजनमूलक हिंदी:संरचना एवम् अनुप्रयोग-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ दिनेशगुप्त (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता-डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. प्रयोजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
7. प्रयोजनमूलक हिंदी:सिद्धांत और प्रयोग-दंगल झाल्टे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. मीडिया-लेखन-डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
9. व्यावहारिक अनुवाद-डॉ.एन.ई.विश्वनाथ ऐयर
10. अनुवाद-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी
11. अनुवाद-बोध-डॉ.गार्गी गुप्त
12. अनुवाद-प्रक्रिया एवम् परिदृश्य-डॉ.रीतारानी पालीवाल (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
13. दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी

14. जनसंचार-विविध आयाम-ब्रजमोहन गुप्त
 15. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
 16. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
-

प्रश्नपत्र -9 आधुनिक हिंदी काव्य

Elective Course-02

प्रस्तावना- आधुनिक हिंदी काव्य नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में इसमें नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इसकी विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक तथा प्रासंगिक है।

1. उर्वशी- रामधारी सिंह 'दिनकर'
2. धर्मवीर भारती - अंधायुग (प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 हिंदी का राष्ट्रीय कविता: प्रवर्तक और विशेषताएँ।

ईकाई-2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी प्रबंध-काव्य।

हिंदी कृष्ण-काव्य: उद्भव और विकास।

ईकाई-3 उर्वशी

1. रामधारी सिंह 'दिनकर': व्यक्तित्व और कृतित्व
2. 'उर्वशी' का काव्य-स्वरूप
3. 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य तथा संदेश
4. 'उर्वशी' के पात्र
5. 'उर्वशी' के प्रेरणास्रोत
6. 'उर्वशी' में काम, प्रेम और अध्यात्म-दर्शन
6. 'उर्वशी' का भाव और कला-पक्ष।

ईकाई-4 अंधायुग

1. धर्मवीर भारती: व्यक्तित्व और कृतित्व।

2. 'अंधायुग': काव्य-स्वरूप।
3. 'अंधायुग' पौराणिक पृष्ठभूमि और प्रतिपाद्य।
4. आधुनिक हिंदी प्रबंध-काव्यों में 'अंधायुग' का स्थान।
5. 'अंधायुग': चरित्र-अश्वत्थामा तथा अन्य पात्रों का अर्धसत्या।
6. 'अंधायुग': भाव और कला-पक्ष।
7. 'अंधायुग' का नाट्य-शिल्प।

अंक विभाजन:

- 3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)
- 1 प्रश्न टिप्पणी व संसंदर्भ व्याख्या का (हरेक पुस्तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधारित (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. धर्मवीर भारती: युग-चेतना और अभिव्यक्ति-डॉ.सरिता शुक्ला (चिंतन प्रकाशन, कानपुर)
2. धर्मवीर भारती: अनुभव और अभिव्यक्ति-लक्ष्मणदत्त गौतम (भारत पुस्तक भंडार, दिल्ली)
3. नई कविता के प्रतिमान-लक्ष्मीकांत वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. नयी कविता(काव्य पक्ष)-रामस्वरूप चतुर्वेदी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. अंधायुग: एक विवेचन-हरिश्चंद्र वर्मा, सहकारी प्रकाशन, दिल्ली
6. अंधायुग: एक सृजनात्मक उपलब्धि-सुरेश गौतम, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली
7. दिनकर और उनकी काव्य-प्रवृत्तियाँ-डॉ.शिवचंद्र शर्मा, जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता
8. युगचरण दिनकर-सावित्री सिंहा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
9. रामधारी सिंह दिनकर-मन्मथनाथ गुप्त, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
10. राष्ट्र कवि दिनकर-सं.डॉ.गोपाल, ग्रंथ निकेतन, पटना
11. दिनकर का काव्य-डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मैकमिलन, दिल्ली
12. उर्वशी:विचार और विश्लेषण-डॉ.वचनदेव कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
13. दिनकर और उनकी उर्वशी-डॉ.देशराज सिंह बाटी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
14. उर्वशी-एक पुनर्मूल्यांकन-डॉ.विजेन्द्रनारायण सिंह, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
15. उर्वशी: कामुकी और चिंतन-डॉ.अरविंद पांडेय, साहित्य संस्थान, कानपुर
16. आधुनिक प्रबंध काव्य: संवेदना के धरातल-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)

अथवा

प्रस्तावना- छायावाद हिंदी के आधुनिक काल की कविता की एक नूतन और मौलिक उपलब्धि है। इसमें कवियों ने अपनी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति की है। प्रेम, प्रकृति और अध्यात्म इसके मुख्य विषय रहे हैं। शैली इसकी नवीन है। प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील-स्तंभ हैं। छायावाद के बिना हम इस शताब्दी की धड़कनों को समझने में असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन-मनन बहुत ही प्रासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. महादेवी - निहार (प्रकाशक- लोकभारती, इलाहाबाद)
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- राम की शक्तिपूजा
अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. छायावाद के उद्भव व पतन के कारण।

- ईकाई-2** 1. छायावाद का ऐतिहासिक महत्व।
2. हिंदी साहित्य में छायावाद का स्थान।

ईकाई-3 नीहार

1. महादेवी वर्मा: परिचय।
2. 'नीहार' में कौतूहल मिश्रित वेदना की अभिव्यक्ति।
3. छायावादी रचना के रूप में नीहार।
4. 'नीहार' में प्रेम एवम् प्रकृति-वर्णन।
5. 'नीहार' में रहस्यवादी भावना।
6. 'नीहार' का काव्य-सौष्ठव।

ईकाई-4 राम की शक्तिपूजा

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'-व्यक्तित्व और कृतित्व।
2. 'राम की शक्तिपूजा' एक लघु पौराणिक आख्यानक काव्य।
3. 'राम की शक्तिपूजा' में अभिव्यक्त राम का संशय एवम् समसामयिकता
4. 'राम की शक्तिपूजा': निराला के रचनात्मक संघर्ष, संशय और आत्म-बलिदान की कहानी
5. 'राम की शक्तिपूजा' की पात्र-सृष्टि।
6. 'राम की शक्तिपूजा' का कला-पक्ष।

अंक विभाजन:

3 आलोचनात्मक प्रश्न-ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी व ससंदर्भ व्याख्या का (हरेक पुस्तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधारित (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. छायावाद के आधार स्तंभ-गंगाप्रसाद पाण्डेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. महादेवी-इन्द्रनाथ मदान (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
4. महीयसी महादेवी-गंगाप्रसाद विमल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. महादेवी-डॉ.परमानंद श्रीवास्तव (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
6. निराला का काव्य:विविध संदर्भ-डॉ.मीरा श्रीवास्तव (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. निराला-संपा. डॉ.विश्वनाथ तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. निराला: आत्महंता आस्था-दूधनाथ सिंह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र - 10 दृश्य-श्राव्य माध्यम लेखन

Multi Disciplinary Course-02

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गयी है। हिंदी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य-श्राव्य माध्यमों ले संबंधित विधाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम रोजगारपरक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।

हिंदी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।

हिंदी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

ईकाई-2 रेडियो नाटक की प्रविधि।

रंगनाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक में अंतर।

रेडियो नाटक के प्रमुख भेद-रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक,

आलेख रूपक (डॉक्यूमेंट्री फीचर)।

ईकाई-3 टी.वी. नाटक की तकनीक।

टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी.धारावाहिक में साम्य-वैषम्य।

संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।

साहित्यिक विधाओं की दृश्य-श्रव्य रूपांतरण-कला।

- ईकाई-4** इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन-संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।
संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।
विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।
संचार माध्यमों की भाषा।

अंक विभाजन-

3 आलोचनात्मक प्रश्न – ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 प्रश्न टिप्पणी का – ईकाई 1-2-3 से एक और ईकाई 4 से एक (दो टिप्पणियाँ) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. मीडिया-लेखन-डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
 2. दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी
 3. जनसंचार-विविध आयाम-ब्रजमोहन गुप्त
 4. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
 5. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ. हरिमोहन
 6. ब्रेक के बाद-सुधीश पचौरी
 7. मीडिया और बाजारवाद-रामशरण जोशी (राधाकृष्ण प्रकाशन)
 8. फीचर लेखन: स्वरूप और शिल्प-डॉ. मनोहर प्रभाकर (राधाकृष्ण प्रकाशन)
 9. समाचार संपादन-कमल दीक्षित, महेश दर्पण (राधाकृष्ण प्रकाशन)
 10. टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया-महाराज शाह (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
 11. भारतीय इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-देवव्रत सिंह (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
 12. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-पी.के. आर्य (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
-

M.A. DEGREE COURSE HINDI

2ND SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 6 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-4	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -7 पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER -8 प्रयोजनमूलक हिंदी Core Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER- 9 आधुनिक हिंदी काव्य Elective Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER- 9 छायावाद	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04

	Elective Course-2					
6	PAPER -10 दृश्य-श्राव्य माध्यम लेखन Multi Disciplinary Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each			Each Day 5 th Hour can	
Tuesday	Semester.			be used for	
Wednes	Four Hours for each course per week			seminar/presentation	
Thursday	Total teaching hours per week=20			ect.	
Friday					
Saturday	Self Study Course				